जिन सायर खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए।
फिरत अहनिस रंग रुत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए।। १० ।।

जिस पारब्रह्म ने समुद्र खुदवाए, पहाड़ खड़े किए, सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र घुमाए, जिनके रात-दिन घूमने से ऋतु और रंग बनते हैं तथा जो ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड बनाने वाला है, निराकार कैसे हो सकता है?

जिन खिनमें तत्व पांच समारे, नास करे खिन मांहीं।
ए कहां से उपाय कहां ले समाए, ए विचारत क्यों नांहीं।। ११ ।।

जो एक पल में पांच तत्वों को बनाकर मिटा देता है, वह इन्हें कहां से बनाता है और कहां मिटाकर समा देता है? हे साधो! तुम इसका विचार क्यों नहीं करते और उसे निराकार कैसे कहते हो?

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे, भाने मनको भरम।। १२ ।।

हे साधो! सतगुरु उसको कहना चाहिए जो पारब्रह्म की पहचान कराए। जो हद और बेहद के भेद समझावे (क्षर और अक्षर की पहचान कराए) और मन के संशय मिटाए।

महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो न दिखने वाले पारब्रह्म को दिखा दे तथा इस माया से चित्त को पलटकर प्रेम से धनी के सम्मुख कर दे केवल उसे ही गुरु बनाना चाहिए।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ३७ ।।

राग श्री केदारो

नोट—यह प्रकरण ठट्ठानगर में चिन्तामणिजी को जगाने के लिए उतरा है। वही ज्ञान हमारे लिए भी है।

सुनो रे सतके बनजारे, एक बात कहूं समझाई।
या फंद बाजी रची माया की, तामें सब कोई रह्या उरझाई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सत के व्यापारियो! गुरुजनो! एक बात समझाकर कहता हूं, उसे सुनो। यह सारा संसार माया के फन्दे में जकड़ा हुआ है। इसमें सभी उलझे पड़े हैं।

आंटी आन के फांसी लगाई, वे भी उलटीऐं दई उलटाई।
बंध पर बंध दिए बिध बिध के, सो खोली किनहूं न जाई।। २ ।।

अपने ही हाथ से अपने ही गले में माया की उलटी फांसी लगा रखी है, अर्थात् गृहस्थ आश्रम छोड़कर आचार्य बने पर इस उलटी माया ने गुरु गद्दी के अहंकार में त्याग वृत्ति बदल दी। ऊपर से मान-सम्मान, लोकलाज-मर्यादा, धर्म-पन्थ, पैंडों के तथा जो यहां किसी से खुल नहीं सकते, ऐसे तरह-तरह के बन्धन लगा दिए, अर्थात् सबके साथ उठना, बैठना, खाना-पीना समभाव छूट गया। इस प्रकार ऐसे कठिन बन्धन स्वयं बांध लिए जिससे छूटना कठिन है।

Nijanand App

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठे को खेल झुठाई।
प्रगट नास व्यास पुकारे, सुकदेव साख पुराई।। ३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसे ही अज्ञान का अंधेरा छाया है। यहां के परमात्मा भी झूठे हैं और उनका यह खेल भी झूठा है। व्यासजी ने स्पष्ट कहा है कि यह ब्रह्माण्ड जो बना है यह नष्ट होने वाला है और उसकी गवाही शुकदेवजी ने भी दी है।

लोक लाज मरजादा छोड़ी, तब ग्यान पदवी पाई।
एक आग ज्यों छोटी बुझाई, त्यों दूजी मोटी लगाई।। ४ ।।

तुम (धर्म के ठेकेदारों) ने संसार की लोक-लाज, मर्यादा को छोड़कर ज्ञानी और त्यागी बनने तथा महन्त आचार्य बनने के रूप धारण कर ज्ञानी की पदवी पाई। तुमने घर गृहस्थी की जिम्मेदारी की छोटी आग को बुझाया और उससे बड़ी आग मान एवं अहंकार, धर्म सम्भालने की, चेला मूंडने की लगा ली है।

कोट सेवक करो नाम निकालो, इष्ट चलाओ बड़ाई।
सेवा कराओ सतगुर केहेलाओ, पर अलख न देवे लखाई।। ५ ।।

महन्त, आचार्य, गादीपति तथा जगद्गुरु, आदि बनकर लाखों सेवक बना लो तथा साक्षात् इष्ट बनकर अपना पंथ चलाओ। सेवकों से सेवा कराओ तथा सत का ज्ञान देने वाले सतगुरु की उपाधि भी ले लो, परन्तु उस पारब्रह्म सच्चिदानन्द की पहचान तुम्हें नहीं होगी।

अब छोड़ो रे मान गुमान ग्यान को, एही खाड़ बड़ी भाई।
एक डारी त्यों दूजी भी डारो, जलाए देओ चतुराई।। ६ ।।

अब तुम इस झूठे ज्ञान को, मान को, अहंकार को तथा उपाधि को छोड़ दो। यह बहुत बड़ी खाई है। हे चिन्तामणि! तुमने जैसे गद्दी का मोह छोड़ा है वैसे ही अपने शिष्य में मान-मर्यादा रखने की भावना को भी त्याग दो और अन्दर-बाहर से निर्मल होकर धोखा देने वाली चतुराई को छोड़ दो।

सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैंडों में पाइए नाहीं।
सतगुर न्यारा रहत सकल थें, कोई एक कुली में कांही।। ७ ।।

शास्त्रों, पुराणों में, साधुओं के भेषों में, जुदा-जुदा धर्म के पन्थों में कितना ही खोजो, इसमें सत पारब्रह्म की पहचान देने वाला कोई नहीं मिलेगा। सत का ज्ञान देने वाला सतगुरु तो कलियुग में कहीं कोई एक मिलेगा।

सत चाहो सो सब्दा चीन्हो, सो आप न देवे देखाई।
जिन पाया तिन मांहें समाया, राखत जोर छिपाई।। ८ ।।

यदि तुम पारब्रह्म से मिलना चाहते हो तो मेरे इन शब्दों को पहचानो। वह सतगुरु जिन्होंने पारब्रह्म को पा लिया है, तुम्हें ऐसे दिखाई नहीं देंगे। वह अपने अन्दर ही धनी को छिपाकर रखते हैं।

सुध सबे पाइए सब्दों से, जो होवे मूल सगाई।
खिन एक बिलम न कीजे तब तो, लीजे जीव जगाई।। ९ ।।

सतगुरु की पहचान तो उनके शब्दों से ही होती है। यदि तुम्हारा उनसे मूल सम्बन्ध है तो फिर एक पल की देर किए बिना जीव को जगा लो।

Nijanand App

पर मनुआ दिए बिन हाथ न आवे, सत की बड़ी ठकुराई।
और उपाय याको कोई नाहीं, जिन देवे आप बड़ाई।। १० ।।

सत जो पारब्रह्म हैं उनकी बड़ी महानता है। उन्हें बिना समर्पण हुए प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसके बिना उन्हें प्राप्त करने का कोई दूसरा उपाय नहीं है, इसलिए अपनी गादीपति, धर्माचार्य होने की भावना व पद को त्याग दो।

महामत कहें सावचेत होइयो, मिल्या है अंकूरों आई।
झूठी छूटे सांची पाइए, सतगुर लीजे रिझाई।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे साथजी! तुम माया में सावधान हो जाओ। तुम्हारी निसबत होने के कारण ही धनी माया में आकर मिले हैं, अतः यदि इस झूठी दुनियां को छोड़कर अखण्ड परमधाम मिलता है तो ऐसे सतगुरु को रिझा लो।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ ४८ ॥

राग गौड़ी

भाई रे बेहद के बनजारे, तुम देखो रे मनुए का खेल।
ए सब आग बिना दीया जले, याको रूई न बाती तेल।। १ ।।

हे भाई! तुम बेहद के ज्ञान देने वाले व्यापारी हो, इसलिए तुम इस मन के खेल को देखो। यह कुछ भी नहीं है, सपना है, यहां बिना आग के दीपक जलता है। जिसमें न रुई है, न बाती है और न तेल है, अर्थात् यहां किसी के अन्दर अखण्ड तारतम ज्ञान की जोत नहीं है। प्रेम का घी नहीं है। श्रद्धा और प्रेम लक्षणा भक्ति की बाती ही नहीं है। इस तरह से यह तन सूखे दीपक के समान है, जो काम, क्रोध, मोह, लोभ की अग्नि में जल रहा है।

चारों तरफों चौदे लोकों, बैकुंठ लग पाताल।
फूल पात फल नहीं या द्रखत को, काष्ट त्वचा मूल न डाल।। २ ।।

इस ब्रह्माण्ड में चौदह लोकों के चारों तरफ बैकुण्ठ से पाताल तक ऐसी पेड़ रूपी उलटी माया फैली है जिसमें फल, फूल, पत्ता, लकड़ी, छाल, जड़ और डाली कुछ भी नहीं है।

देत देखाई तत्व पांचों, मिल रचियो ब्रह्मांड।
जिनसे उपजे सो कछुए नाहीं, आप न पोते पिंड।। ३ ।।

यहां जो कुछ भी दिखाई पड़ता है वह पांच तत्व की मिली रचना है। यह पांचों तत्व जिससे बने हैं वह कुछ नहीं है। निराकार है अर्थात् उसका कोई स्वरूप, आकार, पिण्ड नहीं है।

नहीं पिंड पोते हाथ पांउ भी नाहीं, नाटक नाच देखावे।
मुख न जुबां कछू नहीं याको, और बानी विविध पेरे गावे।। ४ ।।

जब इसके रचने वाले का अपना ही तन नहीं है, हाथ, पांव नहीं हैं तो बिना इसके वजूद के यह सारा ब्रह्माण्ड कैसे नाच रहा है। इसका मुख नहीं है, जबान नहीं है और यह निराकार है तो यह बोलता कैसे है? यहां तरह-तरह के धर्म शास्त्र कैसे बने हैं?

Nijanand App